# पति का परिवर्तन

* ब्रह्माकुमारी सीमा, फाजिल्का (पंजाब)

मेरा जन्म राजस्थान के विजयनगर कस्बे में हुआ। मेरे परिवार में पूजा, पाठ, तीर्थ-यात्रा आदि को बहुत महत्व दिया जाता है। मैं भी हरिद्वार, मथुरा, वृंदावन आदि में भगवान को ढूँढ़ती रही। जब बड़ी हुई तो गली-मोहल्ले की माताओं को प्रेमसागर, कार्तिक महात्मय, श्रीमद्भगवद् गीता आदि सुनाती थी लेकिन ये सब मेरी समझ में ज्यादा नहीं आते थे। गीता के महात्मय की कहानियाँ पढ़कर मैं मन ही मन हँसती थी। भोली माताएँ उनका आनंद लेती और मुझे आशीर्वाद देती कि शादी के बाद तुझे अच्छा घर, परिवार मिले। मेरा सौभाग्य रहा कि शादी ऐसे परिवार में हुई जो साकार ब्रह्मा बाबा की पालना लिए हुए था। युगल के मामा ब्रह्माकुमार हंसराज भाई ने साकार बाबा की पालना ली हुई थी। भक्ति और दुआ का फल था कि मुझे लौकिक के साथ अलौकिक साजन (शिवबाबा) भी मिल गए।

मैं घर में बड़ी बहू हूँ इसलिए सबका मुझ पर विशेष स्नेह रहा। मेरी सास मुझे मुरली सुनाने को कहती तो मैं मना नहीं कर पाती थी लेकिन मुरली पढ़ते-पढ़ते लाइनें छोड़ देती थी। वे कहती थी कि तुम इतना जल्दी मुरली कैसे पढ़ लेती हो, मैं हँस कर टाल देती थी। सन् 1996 में मेरी सास मुझे फाजिल्का के पुराने आश्रम में ले कर गई। वहाँ कोई भी बहन नहीं रहती थी। बहुत पहले मम्मा, दादी चन्द्रमणि, दादी मनोहरइंद्रा व अन्य बड़ी बहनें वहाँ आ चुकी थीं। आश्रम की इमारत जर्जर हो चुकी थी। छत पर पाँव रखने पर वह हिलती थी। खैर, मैं बाबा के कमरे में गई, मुरली पढ़ कर जब योग में बैठी तो मुझे बहुत हलकापन, खुशी तथा आनंद का अनुभव हुआ, ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। अब मुझे रोज़ खींच होने लगी और मैं रोज़ जाने लगी। केवल चार-पाँच भाई-बहनें ही क्लास करते थे। उन्होंने रविवार को मुरली पढ़ कर सुनाने की सेवा मुझे दे दी।

मेरे युगल सरकारी स्कूल में साइन्स मास्टर हैं, उन्हें मेरा आश्रम जाना पसंद नहीं था। जब भी मैं आश्रम के लिए निकलती, मुझे रोकने की कोशिश करते। मैं उनकी रोक-टोक को प्रभु प्रसाद समझ कर चुप-चाप स्वीकार कर लेती और आश्रम भी चली जाती।

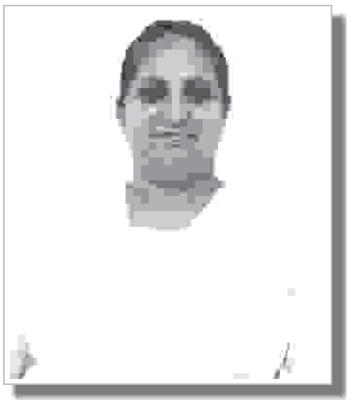

एम.ए.बी.एड. की डिग्री होने के कारण उन्हीं दिनों मुझे एक कॉलेज में लैक्चरर की नौकरी मिल गई। कॉलेज, आश्रम की पिछली गली में है इसलिए कॉलेज के खाली समय में मैं बाबा के पास चली जाती। सन् 2002 में हमने अपना स्कूल खोला जिसे चलाने और बढ़ाने में बाबा की शिक्षाओं ने बड़ी मदद की। सन् 2005 (20 जून) में बाबा का सेवाकेन्द्र नए भवन में प्रारम्भ हुआ। हमने अपने स्कूल में राजयोग शिविर का आयोजन किया जिससे बच्चों तथा अध्यापकों को बहुत लाभ हुआ। शिविर के समापन सत्र के बाद जब मैं घर लौटी तो अचानक पेट में बहुत तेज दर्द हुआ। हॉस्पिटल ले जाया गया तो पता चला कि पेट में कोई नाड़ी फट गई है और खून पेट में इकट्ठा हो गया है जिस कारण तुरंत ऑपरेशन

करना जरूरी है। खून तीन ग्राम ही रह गया था। मेरे बचने की उम्मीद किसी को नहीं थी। लेकिन अनुभव ऐसे हो रहा था जैसे कोई लाइट का घेरा मेरे आस-पास है और मौत को नज़दीक आने से रोक रहा है। डॉक्टरों ने ऑपरेशन किया और सात यूनिट खून चढ़ाया। मुझे ऐसा लगा कि इसी शरीर में मेरा दूसरा जन्म हुआ है। सभी को यह निश्चय हो गया कि किसी चमत्कार से ही इसका जीवन बचा है। हॉस्पिटल से छुट्टी मिलते ही मेरे युगल मुझे सेवाकेन्द्र (बाबा के घर) ले गए और उसी दिन से इन्होंने ईश्वरीय ज्ञान की धारणाओं पर चलने का वायदा कर लिया जिससे इन्हें बहुत फायदा हुआ। इनके स्कूल के बच्चे इन्हें डॉन नंबर एक कहते थे और बहुत डरते थे। अब इन्होंने गुस्सा करना व बच्चों को मारना छोड़ दिया है और बच्चों के चहेते बन गए हैं।

मेरे लौकिक भाई ने 18 जनवरी, 2008 को व मेरी लौकिक माँ ने 18 जनवरी, 2011 को जब देह त्यागा तो मैं दोनों बार आश्रम में ही थी, बाबा ने मुझे बिल्कुल नहीं रोने दिया। पीहर घर में भी ज्ञान-योग का वातावरण निमित्त बहनों द्वारा बनाया गया जिससे बाबा की सेवा के साथ-साथ घर में रोना-धोना भी कम हो गया।

बाबा की शक्ति से तीनों बच्चे इस महायज्ञ में समय-समय पर सेवा देते हैं और युगल स्थानीय आश्रम में अकाउंट्स की सेवा देते हैं। मन कहता है, सब कुछ तो मिल गया है तुझे चाहने के बाद। दस साल बाबा के घर जाने के लिए तड़पी, अब साल में कई बार बाबा के घर जा सकती हूँ। मैंने तो प्रभु से चरणों में जगह माँगी थी, उन्होंने दिल में बसा लिया है। ❖

## परमात्म प्रेम में विश्वास और गहरा हो गया

**ब्रह्माकुमारी मंजू गुप्ता, वैशाली नगर, जयपुर**

ज्ञान में आए मुझे बहुत कम समय हुआ है परन्तु शान्ति का अनुभव बहुत हुआ है। मेरे जीवन में इतने कम समय में अनेक चमत्कार हुए हैं। छोटे-छोटे चमत्कारों से तो मैंने सुख अनुभव किया ही है परन्तु एक बहुत बड़े चमत्कार ने तो परमपिता परमेश्वर शिव बाबा के साथ मेरे प्रेम और विश्वास में अधिक प्रगाढ़ता ला दी है।

मेरे एक रिश्तेदार शारीरिक कमज़ोरी के कारण डॉक्टर की सलाह लेने गए। अनेक प्रकार की जाँच और डॉक्टरों के कहे अनुसार उनकी बीमारी कैंसर थी और वो भी अन्तिम स्टेज पर। डॉक्टर ने अगले दिन ही सर्जरी करने का अपना विचार बताया। अचानक ऐसी गंभीर बीमारी की बात सुनकर हम सब स्तब्ध रह गये। सोच-विचार करके उनका बेटा उन्हें देहली ले गया। इस नाजुक परिस्थिति में मैंने शिव बाबा को याद किया और उनके बेटे को कह दिया कि इन्हें कैंसर नहीं है और बहुत जल्दी ही स्वस्थ होकर ये घर वापस लौट आयेंगे। मुझे नहीं पता कि मैंने ऐसा क्यों कहा, शायद बाबा का संकेत मुझे आशीर्वाद के रूप में मिल गया। अब प्रतिदिन मेरी विशेष शुभभावना उनके स्वस्थ होकर वापस घर लौटने के लिए परमपिता शिव बाबा से होती थी। उनका घर जयपुर में बाबा के घर के सामने ही है। मैं सेवाकेन्द्र में आते-जाते बाबा से शक्तिशाली शुभ वायब्रेशन्स लेकर उनको देती। देहली में कई डॉक्टरों से सम्पर्क करते हुए ''कैंसर नहीं है'' का सर्टिफिकेट लेकर 10 दिन बाद वे जयपुर लौट आए।

यह चमत्कार सिर्फ शिव बाबा ने ही किया है। शिव बाबा ने मेरी शुभभावना स्वीकार करके हमारे परिवार को जीवनदान दिया है। ❖